Keep Visiting : www.gurdeepsingh.jimdo.com & www.gyansclasses.jimdo.com
Also Visit : www.niwasbuilders.com & www.mayadentalclinic.jimdo.com

विस्मृति

डा. दिनेश चमोला ''शैलेश''

सेठ दुनीचंद के पास इतनी धन–दौलत थी कि हीरे–जवाहरातों की पोटली कहीं रखते तो दूसरे क्षण भूल जाते। ईश्वर भक्ति में जब भी ध्यान लगाते तो मन उचट जाता। एक दिन उन्होंने एक संत से अपनी विस्मृति का करण पूछा तो संत ने मुस्कुराते हुए कहा–

सेठ जी, भौतिकता का संग्रह अज्ञान है। अज्ञान सदैव उलझाता है, भटकाता है, भरमाता है या लड़वाता है। ज्ञान व परोपकार जीवन की गुत्थियों को सुलझाकार मुक्ति प्रदान करता है। प्रकृति से सीख लों उसका अपने लिए कुछ भी नहीं है, सब कुछ दूसरों के लिए है। क्या प्रकृति ऋतुएं खिलाना भूली? क्या पौधे फूल खिलाना भूले? कितना असंख्य सग्रंह है उनके पास। जिस प्रागण में तुम खड़े हो उस धरती पर सैंकड़ो प्रकार के घास फूस व फूलों के बीज हैं....यह सब एक साल बाद यहीं उगेंगे.....उसके बाद और.....और उसके बाद और। इस आपार धन से परोपकार करो, तुम्हारी समृति लौट आएगी।

ज्ञान पा सेठ ने संत के चरण छू लिए।

****

www.gurdeepsingh.jimdo.com

****